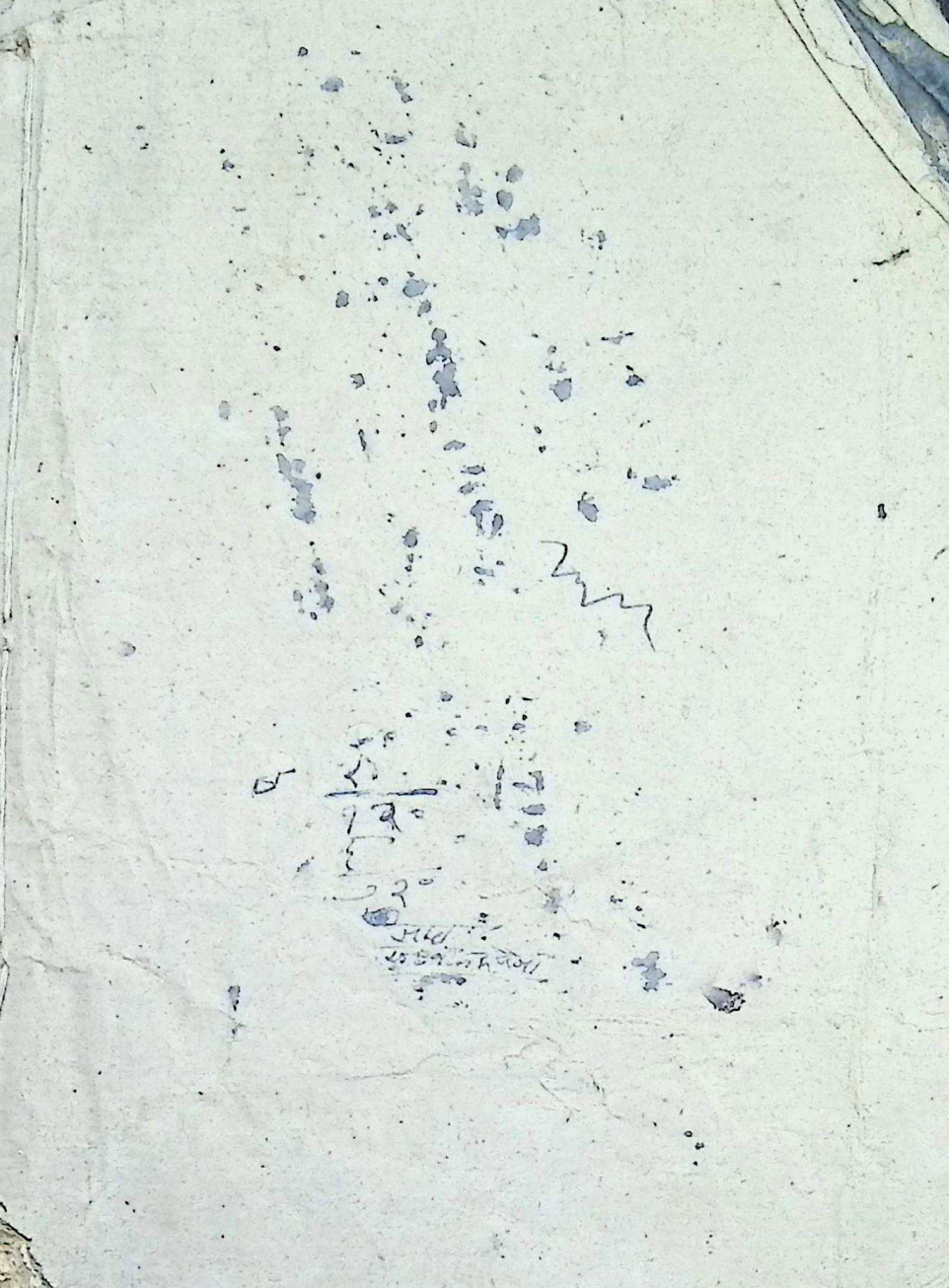

MS 1948 3 33

॥ श्रीः ॥

"श्रीनारायणज्योतिर्वैद्य कार्यालय"

प्रारंभः संवत् १९७४ | ❀ आयुर्वेदोपदेशेषु विधेयः परमादरः ॥ आयुःकामयमानेन धर्मार्थसुखमिच्छता ❀ | इसवी सन 1917

अहिंसा परमो धर्मः प्राणरक्षा परंतपः ॥

अहिंसा परमं दानं यतोधर्म स्ततोजयः ॥

शंखचक्रमुपर्यधश्च करयोर्दिव्यौषधं दक्षिणे ।
वामेनान्यकरेण संभृतसुधाकुंभं जलौकावलिम् ॥
बिभ्राणः करुणाकरः सुखकरः सर्वामयध्वंसकः ।
सर्वमेदुरितं छिनत्तु भगवान् धन्वंतरिः संततम् ॥ १ ॥
अन्यानि शास्त्राणि विनोदमात्रं प्राप्तेषु वा तेषु न तैश्च किंचित् ॥
चिकित्सितज्योतिषमंत्रवादाः पदे पदे प्रत्ययमावहंति ॥ २ ॥

"श्रीनारायणज्योतिर्वैद्य कार्यालय" में हिमाचल की शुद्ध वनौषधियों से बहुत प्रयत्न से सुमूहूर्त में सिद्ध किया हुआ आयुर्वेदीय अनुभवसिद्ध सब प्रकार का उत्तमोत्तम औषधियों का संक्षिप्त

सूचीपत्र

❀ व्यवस्थापक ❀

(मुख्यस्थान) | (शाखास्थान)

बी० डी० के० नारायण शास्त्री, देवपाटन्, पशुपती, नेपाल । | श्रीनारायण ज्योतिर्वैद्यकार्यालय, नक्साल, नागपोखरी, नेपाल ।

सन 1935 संवत् १९९२ द्वितीयवार ८०००

॥ श्रीः ॥

प्रस्तावना ।

कार्यालय स्थापित शाके १८३९ इसवी सन १९१७

क्षीरोदमथनोद्भूतं दिव्यगंधानुलेपितम् ।
सुधाकलशहस्तं तं वंदे धन्वंतरिं हरिम् ॥

हे मेरे प्यारे भाइयो आप लोग यह जानते हैं कि ८४ चौरासी लाख योनियों में मनुष्य योनिही परम श्रेष्ठ है। क्योंकि मनुष्यदेहसे ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये ४ चार पुरुषार्थ बन सकते हैं, देह नीरोग रहने से ये सब पुरुषार्थ सिद्ध हो सकते हैं, इसलिये प्रथम सब मनुष्यों ने अपना देह नीरोग रखना चाहिये, धन जन आदि का बल न हो तो भी नीरोग और बलवान रहने से व्यावहारिक कर्म और पारमार्थिक जप तप इत्यादि धर्म और मोक्ष के उपाय श्रवण मननादि भी मनुष्य कर सकते हैं। अन्यथा नहीं ॥ पुराण में लिखा है—"विना देहेन कस्यापि पुरुषार्थो न सिध्यति ॥ तस्मादेहं ध्रुवं रक्षेत्पुरुषार्थं प्रसाधयेत् ॥ एक विद्वान् ने भी कहा है—"देहं वृथोपचारैर्मा कुरु पुरुषार्थसाधनं क्षीणम् ॥ यद्यस्तिसौधभित्तिश्चित्रं चेतोहरं तदैवास्ति ॥ संन्यासियों को भी योग्य अन्न वस्त्र आदि से शरीर की रक्षा करना, ऐसा वेदांत में कहा है, तब ब्रह्मचारी और गृहस्थ इन लोगों को तो अवश्य ही शरीर की रक्षा करना चाहिये शरीररक्षा के मुख्य साधन २ दो हैं, एक औषधोपचार और दूसरा जप दान पाठ पूजादि। बत्तीका आयु तेल है, वह रहते भी, बत्ती हवा से मरती है, हवा से बत्ती को बचा देने से तेल रहने तक वह अच्छी तरह से बलती है। ऐसे ही मनुष्य औषध सेवन और ग्रहशान्ति करके अपमृत्यु हटावेगा तो अपना पूरा आयु रहने तक अवश्य

बचेगा, इसलिये मनुष्य ने उभय साधनों को करना चाहिये। वैद्यशास्त्र में "सर्वकायेन संसाध्यं तस्यायुःस्थितिकारणम् ॥ आयुर्वेदोपदेशस्तु कस्य न स्यात्फलावहः ॥ ऐसा कहा है ॥ औषधें भी भरतखण्डके लोगोंने भरतखण्ड की वनस्पतियों से ही बनी हुई सेवन करना उचित है ॥ आयुर्वेदाचार्यों का सिद्धांत है कि "यस्यदेशस्य यो जन्तुस्तद्देशस्यौषधं हितम् ॥ देशादन्यत्र वसतस्तत्तल्यगुणमौषधम् ॥ ऊपर लिखी हुई सब बातों का विचार करके हम हिमालयादि तत्तत्स्थानों की वनस्पतियों से बहुत परिश्रम करके स्वतः अनेक भस्में, रसादि, काष्ठादि, अवलेह, घृत, तैलादि औषधें बनाके बहुत किफायतके साथ दे रहे हैं हमारी दवायें कितनी गुणकारक हैं, यह अनुभवसे मात्र मालूम होगा ॥

प्रिय भाइयो, योगरत्नाकर में—"पूर्वजन्मकृतं पापं व्याधिरूपेण बाधते ॥ तच्छांतिरौषधैर्दानैर्जपहोमसुरार्चनैः ॥ तथाच=धर्मेण हन्यते व्याधिर्हन्यन्ते च तथा ग्रहाः ॥ धर्मेण हन्यते शत्रुर्यतो धर्मस्ततो जयः ॥" ऐसा लिखा है, इसलिये पहले पूर्व कालिक पापों की शान्ति करके पीछे दवा सेवन करने से अवश्य आराम होगा ॥

पूर्व जन्म के पाप पुण्यों को दैव कहते हैं, वह ज्योतिःशास्त्र, कर्मविपाक, भृगुसंहिता, बृहत्पाराशरी होराशास्त्रादि से जाना जाता है, ज्योतिष शास्त्र में भी आचार्यों का मत यही है कि="तत्सत्यं च सत्योदितं, स्याद्धर्मिष्ठसुशीलपथ्यसुभुजां न स्यादिदं पापिनाम् " अर्थात् जो कुंडली आदि का फल कहा है सो सुशील, धर्मिष्ठ, सत्यवादी, पथ्य सवियों को ठीक होता है, अकालमृत्यु नहीं होगा, आयु रहने तक बच सकता है ॥ लेकिन् कुपथ्यसेवी, पापकर्म में आसक्त, चोरकृत्यनिरत, गुरु-देव-ब्राह्मण-निंदक, परदारासक्त लोगों को अकालमृत्यु ही होता है ॥ सब भाइयों के हितार्थ हमने बहुत काल से वैद्यशास्त्र और ज्योतिःशास्त्र में भी बहुत परिश्रम किया है, हम पहले ज्योतिःशास्त्र से मुहूर्त का और ग्रहों का विचार करके दवा करते हैं, इस निमित्त अवश्य गुण आता है, और हमारे दवाओं ने बहुत लोगों को आराम किया है, इस विषय में हमें, लोगों ने मेडल प्रशंसापत्र (सर्टिफिकिटें) भी दिये हैं, ऊपर लिखी हुई बातों का अनुभव एक वार करके देख लीजियेगा ॥

विशेष सूचना—नेपाल में भी. पी. मनिआर्डर नहीं चलता है। इससे नोट् या टिकट रजिष्टरी इन्श्योर करके भेजने से तुरन्त आपके पास औषधियों का पार्सल पहुँच जायगा।

जो महाशय इन औषधियों का एजन्ट होना चाहते हैं उनको पत्रव्यवहार से उचित कमीशन का प्रबन्ध किया जायगा।

जिन महाशयों को वर्षकुण्डली लग्नकुण्डली आदि तयार करवाना हो उनको वर्षपत्रिका—जन्मपत्रिका भी हम तयार करके भेजते हैं। जो महाशय जितनी दक्षिणा भेजेंगे उनको उसी माफिक फल मिहनत के साथ लिखकर भेज देंगे।

श्री नेपालदेशीय, सुगम अनेक विषयों का चक्र, सारिणी, विवाह, व्रतबंधादि मुहूर्तों से विभूषित, २४ पत्रवाला पंचांग शुद्धतापूर्वक प्रतिवर्ष हम छपाते हैं, कठिन स्थल में उदाहरण भाषांतर भी दिया है, १ पंचांग पास में रहने से मामूली ज्योतिषी बन सकता है, माघ शुक्ल १५ पूर्णिमा के लगभग प्रकाश होता है, प्रति १०० का कं० रु० १०) की दर से मिलेगा, डाकखर्च अलग लगेगा, व्यापारियों को ज्यादा प्रतियां चाहिये हों तो पहिले सूचना देना चाहिये॥

पंचांग और सब दवा मिलने का पता—

बी० डी० के० नारायण शास्त्री,
देवपाटन, पोष्ट नेपाल।

तथा प्रधान शिष्य—दैवज्ञ पं० बाबुराम उपाध्याय,
सापकोटा, टंगाल, नेपाल।

सर्वरोग हारी.

नेपाली कस्तूरी मात्रा.

(अनुभवसिद्ध)

प्रियमहाशय ! श्रीनारायण ज्योतिर्वैद्य कार्यालय में तयार की हुई "नेपाली कस्तूरीमात्रा" आप आरोग्यके वास्ते सेवन कीजिए, इसकी रचना उत्तम नेपाली कस्तूरी, भीमसेनी कपूर, काश्मीरी केसर, सोनेका वर्क, मूँगा भस्म, श्रीखण्ड, छोटी इलायची इत्यादि अमूल्य पदार्थोंको और अत्यन्त गुणकारक नेपालकी शुद्ध जड़ी बूटियोंको सुमुहूर्तमें ग्रहण करके बनाई हुई है, महाशयलोग एकवार इसके विचित्र गुणोंको अनुभव करेंगे तो अन्य कस्तूरीगोली, जीनतान, कस्तूरादिवटी इत्यादि सब भूलजायंगे, हरेक मनुष्यके पास हर वक्त यह एक शीशी दवा रहने से अनुभवसिद्ध राजवैद्य पासमें रहने जैसा सहाय होता है। छोटे बच्चोंसे लेकर स्त्री, पुरुष, बूढ़े तकभी समयानुसार १ गोलीसे ५ गोलीतक इसका सेवन कर सकते हैं, १-२ गोली मुखमें धरलेनेसे, सुपारीके साथ, अथवा पानके साथ खानेसे मुखमें सुगंध आता है और कठिन आहार भी जीर्ण होकर बड़ा आनंद प्राप्त होता है। और कास, श्वास, दमा, छातीमें दर्द, धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, नपुंसकत्व, कमजोरी, यादी, शिरदर्द, पेटका दर्द, मलबद्ध, अतिसार, अजीर्णरोग, अम्लपित्त, शीतपित्त, कामलपित्त, बड़र आना, उन्माद, मृगी, भूतबाधा, मुखदुर्गन्धि, हलिबाधा, मुखके फोडे, अलदोष, आहारदोष, प्लेग, विषूचिका, [कालरा] शीतांग, सन्निपातज्वर, जीर्णज्वर, सूतिकावायु, प्रसूतिज्वर, आमवात, प्यास, कुष्ठरोग, अजीर्ण की डकार, वमन, गलग्रह, जिह्वारोग, दंतरोग, पीनस, क्षय, अर्श, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, अदर, वातरोग, संग्रहणी, शोला, शूल इत्यादि समस्त रोग नाश होकर बदनमें ताकत आती है ॥ अक्लमंदलोगोंको, लिखने पढ़नेवाले विद्यार्थी, कारिन्दा, अफिसर और गायक इन लोगोंको भी यह अमूल्य चीज यही "नेपाली कस्तूरीमात्र

की अभिवृद्धि होकर वदनमें गुलाबी आजाती है, और दिमाग सारा दिन आनंदसे पूर्ण रहता है। रोगोंके अनुपान—ताकतके वास्ते मिश्री के काढा और दूधके साथ, बच्चोंको माताके दूधसे, ज्वरमें तुलसी का रस, द्रोणपुष्प. और ज्येष्ठमधुके काढासे, सन्निपातमें अदरख के रससे, संग्रहणीमें छाछसे, सूतिकारोगमें दशमूलके काढासे, दमा, कास, श्वासमें सहतसे, मृगी, उन्मादमें ब्राह्मीके रससे, पित्त [गरम] में मिश्री और जलसे, आम-वातमें सौंफके काढासे, प्रसूति व्यथामें पिप्पलीका चूर्ण और अदरकके रससे, मूत्रकृछ्र, प्रमेह, और स्वप्न-दोषमें चौलाईके रस और मिश्रीसे, अम्लपित्त, शीतपित्त में नरिवल के पानी और चूनेके पानीसे, शूल इत्यादि रोग में पानके साथ लेना चाहिये। एक शीशीका मूल्य ॥) आठ आना। एक दर्जनका मूल्य ५॥) रुपया ॥

"हिमाचलका अमूल्य रत्न"

(शुद्ध शिलाजीत) (शा० ध०)

प्रिय भाइयो ! हम हिमाचलके जिन जिन स्थानोंमें अव्वल शिला-जीत निकलती है वहाँ वहाँ से मंगाकर उत्तम तरहसे सर्व शास्त्रीय संस्कार करके यह रत्न (शुद्ध शिलाजीत) तयार किया है इसके सेवनसे, पुरुषों के धातुक्षीणता, धातुस्राव, रक्तस्राव, नपुंसकत्व, नसोंकी कमजोरी इंद्रिय शिथिलता, स्वप्नदोष, शीघ्रस्खलन, सुजाक, सुस्ती, मूत्ररोग, बहुमूत्र, मूत्रकृछ्र, धातुका पतला होना, मधुमेह, सर्वप्रकारके प्रमेह, छर्दि, सर्व प्रकारके वातरोग, बवासीर, सर्व-प्रकारके कुष्ठरोग, नये घाव, मुखरोग, उदररोग, हृद्रोग, पाण्डुरोग, श्वास, कास, क्षय, उन्माद, मृगी, मुखसे रक्त आना, रक्तवात, कृमि, कफरोग, पित्तविकार, शिरदर्द, कमर आदि की दर्द, अग्निमांद्य, और जीर्णज्वर इत्यादि रोग तथा स्त्रियोंके सर्व प्रकारके प्रदररोग, प्रसूतिरोग, और रजोधर्म संबंधी समस्त गुप्त रोग तत्तदनुपानोंसे समूल नाश होते हैं ॥ इसके अनुपान नेपाली कस्तूरीमात्राके अनुसार जानना ॥ अव्वल शिलाजीतको आयुर्वेदाचार्योंने योगवाही रसायन कहा है ॥ यथा—एलापिप्पलिसंयुक्तं मासमात्रं तु भक्षयेत् । मूत्रकृच्छ्रं मूत्ररोधं हन्ति मेहं तथा क्षयम् ॥ सर्वानुपानैः सर्वत्र रोगेषु विनि-

सर्वरोग हारी.

नेपाली कस्तूरी मात्रा.

(अनुभवसिद्ध)

प्रियमहाशय ! श्रीनारायण ज्योतिर्वैद्य कार्यालय में तयार की हुई "नेपाली कस्तूरीमात्रा" आप आरोग्यके वास्ते सेवन कीजिए, इसकी रचना उत्तम नेपाली कस्तूरी, भीमसेनी कपूर, काश्मीरी केसर, सोनेका वर्क, मूँगा भस्म, श्रीखण्ड, छोटी इलायची इत्यादि अमूल्य पदार्थोंको और अत्यन्त गुणकारक नेपालकी शुद्ध जड़ी बूटियोंको सुमुहूर्तमें ग्रहण करके बनाई हुई है, महाशयलोग एकवार इसके विचित्र गुणोंको अनुभव करेंगे तो अन्य कस्तूरीगोली, जीनतान, कस्तूरादिवटी इत्यादि सब भूलजायंगे, हरेक मनुष्यके पास हर वक्त यह एक शीशी दवा रहने से अनुभवसिद्ध राजवैद्य पासमें रहने जैसा सहाय होता है। छोटे बच्चोंसे लेकर स्त्री, पुरुष, बूढ़े तकभी समयानुसार १ गोलीसे ५ गोलीतक इसका सेवन कर सकते हैं, १-२ गोली मुखमें धरलेनेसे, सुपारीके साथ, अथवा पानके साथ खानेसे मुखमें सुगंध आता है और कठिन आहार भी जीर्ण होकर बड़ा आनंद प्राप्त होता है। और कास, श्वास, दमा, छातीमें दर्द, धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, नपुंसकत्व, कमजोरी, बादी, शिरदर्द, पेटका दर्द, मलबद्ध, अतिसार, अजीर्णरोग, अम्लपित्त, शीतपित्त, कमलपित्त, चक्कर आना, उन्माद, मृगी, भूतबाधा, मुखदुर्गन्धि, कृमिबाधा, मुखके फोडे, जलदोष, आहारदोष, प्लेग, विषूचिका, [कालरा] शीतांग, सन्निपातज्वर, जीर्णज्वर, सूतिकावायु, प्रसूतिव्यथा, आमवात, प्यास, कुष्टरोग, अजीर्ण की डकार, वमन, गलग्रह, जिह्वारोग, दंतरोग, पीनस, क्षय, अर्श, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, प्रदर, बालरोग, संग्रहणी, गोला, शूल इत्यादि समस्त रोग नाश होकर नसोंमें ताकत आती है ॥ प्रवासीलोगोंको, लिखने पढ़नेवाले विद्यार्थी, कारिन्दा, अफिसर और गायक इन लोगोंको भी
होनेकी अमूल्य चीज यही "नेपाली कस्तूरीमात्र

की अभिवृद्धि होकर वदनमें गुलाबी आजाती है, और दिमाग सारा दिन आनंदसे पूर्ण रहता है। रोगोंके अनुपान—ताकतके वास्ते मिश्री के काढा और दूधके साथ, बच्चोंको माताके दूधसे, ज्वरमें तुलसी का रस, द्रोणपुष्प. और ज्येष्ठमधुके काढासे, सन्निपातमें अदरख-के रससे, संग्रहणीमें छाछसे, सूतिकारोगमें दशमूलके काढासे, दमा, कास, श्वासमें सहतसे, मृगी, उन्मादमें ब्राह्मीके रससे, पित्त [गरम] में मिश्री और जलसे, आम-वातमें सौंफके काढासे, प्रसूति व्यथामें पिप्पलीका चूर्ण और अदरकके रससे, मूत्रकृछ्र, प्रमेह, और स्वप्न-दोषमें चौलाईके रस और मिश्रीसे, अम्लपित्त, शीतपित्त में नरिवल के पानी और चूनेके पानीसे, शूल इत्यादि रोग में पानके साथ लेना चाहिये। एक शीशीका मूल्य ॥) आठ आना। एक दर्जनका मूल्य ५॥) रुपया ॥

"हिमाचलका अमूल्य रत्न"

(शुद्ध शिलाजीत) (शा० ध०)

प्रिय भाइयो! हम हिमाचलके जिन जिन स्थानोंमें अव्वल शिला-जीत निकलती है वहाँ वहाँ से मंगाकर उत्तम तरहसे सर्व शास्त्रीय संस्कार करके यह रत्न (शुद्ध शिलाजीत) तयार किया है इसके सेवनसे, पुरुषों के धातुक्षीणता, धातुस्राव, रक्तस्राव, नपुंसकत्व, नसोंकी कमजोरी इंद्रिय शिथिलता, स्वप्नदोष, शीघ्रस्खलन, सुजाक, सुस्ती, मूत्ररोग, बहुमूत्र, मूत्रकृछ्र, धातुका पतला होना, मधुमेह, सर्वप्रकारके प्रमेह, छर्दि, सर्व प्रकारके वातरोग, बवासीर, सर्व-प्रकारके कुष्ठरोग, नये घाव, मुखरोग, उदररोग, हृद्रोग, पाण्डुरोग, श्वास, कास, क्षय, उन्माद, मृगी, मुखसे रक्त आना, रक्तवात, कृमि, कफरोग, पित्तविकार, शिरदर्द, कमर आदि की दर्द, अग्निमांद्य, और जीर्णज्वर इत्यादि रोग तथा स्त्रियोंके सर्व प्रकारके प्रदररोग, प्रसूतिरोग, और रजोधर्म संबंधी समस्त गुप्त रोग तत्तदनुपानोंसे समूल नाश होते हैं ॥ इसके अनुपान नेपाली कस्तूरीमात्राके अनुसार जानना ॥ अव्वल शिलाजीतको आयुर्वेदाचार्योंने योगवाही रसायन कहा है ॥ यथा—एलापिप्पलिसंयुक्तं मासमात्रं तु भक्षयेत्। मूत्रकृच्छ्रं मूत्ररोधं हन्ति मेहं तथा क्षयम् ॥ सर्वानुपानैः सर्वत्र रोगेषु विनि-

योजिते । जयत्यभ्यासतो नूनं तांस्तान्रोगान्नसंशयः ॥ रसरत्नसमुच्चयेपि—नूनं सज्वरपाण्डुशोफशमनं मेहाग्निमांद्यापहं, मेदच्छेदकरं च यद्मशमनं शूलामयोन्मूलनम् । गुल्मप्लीहविनाशनं जठरहृच्छूलामयध्वंसनं, सर्वत्वग्गदनाशनं किमपरं देहे च लोहे स्थितम् ॥ रसोपरसमूतेंद्ररत्नलोहेषु ये गुणाः। वसंति ते शिलाधातौ जराभृत्युजिगीषया ॥ सेवेत यदि षण्मासं रसायनविधानतः। वलीपलितनिर्मुक्तो जीवेद्वर्षशतं सुखी ॥ इत्यादि, मेरे बहुत परिश्रमसे बनाए हुए शिलाजीतसे ऊपर लिखे हुए सर्व रोग, सिर्फ ४६ दिनमें अवश्य समूल ध्वस्त होते हैं ॥ शरीर में नया रक्त, नई ताकत और मुखमें नयी कान्ति पैदा करने की जगत्प्रसिद्ध पेटेण्ट दवा है ॥ अनेक लोगोंको अनुभव आया है, आपलोग भी एकबार अनुभव करके नीरोग होइये, ऐसा रत्न इतने कम दाममें आपलोगोंको मिलरहा है, समय न चूकियेगा और लाभ उठाइयेगा ॥ मूल्य १ तोले का १) एक मंडल ४६ दिनकी पूरी खुराक ५ तोलेके ४) चार रुपये, डाकखर्च अलग लगेगा ॥

नेपाली विचित्र दंतमंजन

(भै० र०)

सौकडों प्रकारके दंतमंजन आप लगाचुके होंगे मगर हमारा मंजन आप एकवार लगाकर देखिये, हमारा विश्वास है कि फिर आप दूसरे मंजनको छूना तो क्या मगर देखना भी नापसंद करेंगे। यह मंजन नेपालकी शुद्ध वनस्पतियोंसे बनाई हुई है, इसके गुण दाँतोंसे रक्त गिरता हो, कीडे लगगए हों, मसूडे फूल आतेहों, दांतमें सर्दीसे या गर्मीसे दर्द होती हो, दाँत हिलते हों, पीक आती हो, पानी लगता हो या किसी प्रकारके दाँतके रोग हों, सब जड़से दूर करने में यह अमोघ रामवाण है। इसके नित्य लगाने से मुखका दुर्गंध नाश होकर दाँत मजबूत और चमकीले होजाते हैं, सब दिन मुख स्वादिष्ट रहता है। हमारे मंजनकी ज्यादा तारीफ हम नहीं कर सक्ते, आप खुद उसकी तारीफ करें ऐसा हम चाहते हैं। एक पुडिया का दाम -)॥ डेढ़ आना, १२ पुडिया का दाम एक रुपया ॥

❀ अत्युत्तम भीमसेनी कपूर ❀

(यो० र०)

भीमसेनाख्यकर्पूरं नेत्ररोगेषु योजयेत् ।
दीपनं शीतलं स्वादु कृमिघ्नं मारुतं जयेत् ॥

खुराक हजमकरनेमें तकलीफ मालुम होतेही आप भीमसेनीकपूर ½ लाल भर पानमें रखकर सेवन कीजिए, एकदम पाचन शक्ति इतनी बढ़ जायगी कि दिनमें एक या दो वक्त की जगह ४ वक्त भोजन करनेकी इच्छा होगी, और प्रत्येक वक्त दूना खुराक खाना पड़ेगा, बादी, पेटका दर्द, अजीर्ण, डकार, प्यास, मुखदुर्गन्धि, कृमिबाधा, दस्त की कबजियत, इत्यादि पेट के सब रोग दूर होते हैं, प्रतिदिन इसके सेवनसे कभी अजीर्ण, विषूचिका (कालरा) इत्यादि कोई बीमारी न होगी, क्योंकि अजीर्ण ही सब बीमारी का मूल है, और भीमसेनी-कपूर प्रवेश होते ही अजीर्ण तो नष्ट हो ही जाता है, स्वाद में उत्तम होनेसे हरेक आदमी खुशी के साथ ले सकता है। और यह भीमसेनी कपूर सारे नेत्ररोगों में भी अत्यन्त गुणकारक वैद्यशास्त्रमें महर्षियों ने लिखा है, तमाम हिंदुस्थान में प्रचार और अनुभवसिद्ध भी है, अनेक लोग बनावट नकली भीमसेनीकपूर विक्रय करके ठगते हैं, इससे गुण बिलकुल नहीं देता है, हम यह दुर्दशा देखकर इसके उत्पत्तिस्थानसे असली भीमसेनी कपूर मंगाकर दवाइयोंमें उपयोग करते हैं, यह वैद्य, हकीम, डाक्टर, साव, महाजन, विद्यार्थी, प्रवासी इत्यादि प्रत्येक मनुष्यों को १ शीशी पासमें रखनेके लायक दवा है। लिखने, पढने, काम करनेवालोंकी दृष्टि जब मंद होजाती है तब जरासा इसका चूर्ण करके नेत्रमें लगानेसे नेत्रमें पानी आना, जलन होना, फुली, लाली और रात्र्यंध इत्यादि सब विकार दूर होकर बड़ा आनंद प्राप्त होता है, बराबर इसका सेवन किया जाय तो आंखका तेज कभी कम नहीं हो सकता है। एक तोलाका मूल्य २) दो रुपये ॥

❋ शिवगुटिका, रसायन ❋

(योगरत्नाकरे)

तासामेकतमां प्रयुज्य विधिवत्प्रातः पुमान् भोजनात् प्राग्वा मुद्गद-लांबुजांगलरसं शीतं श्रृतं वा जलम् ॥ मात्क्षीकं मदिरामगुर्वशनभुक् पीत्वा पयो वा गवां प्राप्नोत्यंगमनंगवत्सुभगतां संपन्नमानंदकृत् ॥ यह शिवगुटिका रसायन, शास्त्रविधिपूर्वक सूर्यपाक से शुद्ध किये हुए शिलाजित का अद्भुत गुणशाली कईएक बूटियों के रस की भावना देकर सूर्यपाक करके अमूल्य अनेक औषधियां मिलाकर बनाया है, इसके गुण बयान करके साध्य नहीं हैं, अनुपान के परिवर्तन से सर्व रोग नाश करता है, नीरोग लोग शिवगुटिका का सेवन करने से रक्त शुद्ध और धातुपुष्ट होकर हृष्टपुष्ट होते हैं, कभी रोग का भय नहीं लगेगा, कामदेव की वृद्धि होगी, क्षयरोग, हृद्रोग, कास, श्वास, धातुस्थान संबंधी रोग, मूत्रस्थान के रोग, गर्भाशय के रोग, रजोदोष, सूतिकारोग, सब एक मंडल (४९ दिन) सेवन करने से समूलध्वस्त होते हैं, एक गोली विधिपूर्वक प्रातःकाल और सायंकाल, भोजन के पहिले सेवन करै, मूंग का जल, शीतल जल, गरम जल, शहत, (मधु) गौ का दूध, मांसरस, मदिरा, इनसे सेवन करै, ऊपर से आँटा, घृत, दूध, आदि गरिष्ठ भोजन करै तो कामदेव के समान सुन्दर शरीर हो सदा आनंद करै, संसार भर में इस दवा से आराम नहीं होने के रोग ही नहीं हैं, विशेष क्या कहैं। निरंतर इसका सेवन करने से उत्तम मतियुक्त अज्ञान से हीन, सदैव ज्ञानवान् महान् पंडित श्रुतिस्मृतिवान् होवै, अंत में श्री शिवजी के समीप जाय। श्रीशिवजी ने इस शिवगुटिका का वर्णन किया है। १ तोला का मूल्य १) रु०

❋ सिद्धमकरध्वजरसः ❋

सर्वरोगहर अमृततुल्य रसायन,

(बृ० र० रा० सुं०)

सन्निपातं ज्वरं घोरमित्युपक्रम्य ॥ सेवनादस्य नश्यंति सर्वे रोगा

न संशयः ॥ करोत्यग्निबलं वीर्यं बलीपलितनाशनः ॥ विधिवत्सेवितो ह्येष मुमूर्षुमपि जीवयेत् ॥ २ ॥ स्वेच्छाहारविहारोपि न कदाचिद्विपद्यते ॥ मेधायुःकांतिजननः कामोद्दीपनकृन्महान् ॥ ३ ॥ अन्यांश्च विविधान् रोगान् नाशयेन्नात्र संशयः ॥ अनुपानविशेषेण करोति विविधान् गुणान् ॥ ४ ॥ यह सिद्धमकरध्वज रस विधिपूर्वक सेवन करने से अकाल-जरामरण नाश करता है, अनुपानके परिवर्तन से सब रोगों में दिया जाता है, और सभी रोगोंपर इसका आश्चर्यफल देख पड़ता है, बड़े बड़े डाक्टर लोग भी इसके विचित्र गुण से मुग्ध होकर बराबर उपयोग करते हैं, इसके समान सर्वरोगनाशक और बलकारक दवा सभ्य जगत में अब तक आविष्कृत नहीं हुई ॥ इसको रोगोक्त अनुपान के साथ सेवन करने से वायु, पित्त, कफ, घोर सन्निपात, ज्वर, मंदाग्नि, अरुचि, आमशूल, कटिशूल, हृदयशूल, पार्श्वशूल, खांसी, श्वास, राजयक्ष्मा, १८ प्रकार के कुष्टरोग, गले की पैदा हुई अंत्रवृद्धि, अतीसार, कफवात से पैदा हुई श्लीपद, नाडीव्रण, व्रण, अर्शरोग, भगंदर, अनेक प्रकार के वायुरोग, ध्वजभंग (इंद्रिय की शिथिलता) २० प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, रजोदोष, अकाल में केश सफेद होना, ये सब रोग नष्ट होते हैं ॥ बल वीर्य बुद्धि आयु कांति देता है, और इसका निरंतर सेवन करने से कामदेव के समान सुंदर शरीर होता है, कामोद्दीपन करता है, स्वेछाहारविहार करे तो भी कोई रोग नहीं होता है, शरीर हृष्टपुष्ट रहता है। १ तोले का मूल्य ७॥) रु० १५८

❋ च्यवनप्राश रसायन ❋

(भैषज्यरत्नावल्याम्)

इत्ययं च्यवनप्राशः परमुक्तो रसायनः ॥ कासश्वासहरश्चैव विशेषेणोपदिश्यते ॥ क्षीणक्षतानां वृद्धानां बालानां चांगवर्धनः ॥ स्वरक्षयमुरोरोगं हृद्रोगं वातशोणितम् ॥ पिपासां मूत्रशुक्रस्थान् दोषांश्चैवापकर्षति ॥ मेधां स्मृतिं कांतिमनामयत्वमायुःप्रकर्षं बलमिंद्रियाणाम् ॥ स्त्रीषु प्रहर्षं परमग्निवृद्धिं बलप्रसादं पवनानुलोम्यम् ॥ रसायनस्यास्य नरः प्रयोगाल्लभेत जीर्णोपि कुटिप्रवेशात् ॥ जराकृतं पूर्वमपास्य

रूपं बिभर्ति रूपं नवयौवनस्य ॥ सर्वरोगावरोधक, सर्वरोगविनाशक, तथा भारत की प्राचीन उन्नति के एकमात्र बीजमंत्र, यथा गीता में "यदिच्छंतो ब्रह्मचर्यं चरंति" इस प्रमाण से छात्र जीवन में ब्रह्मचर्य व्रत प्रतिपालन करना यह है, वह न करने से अपरिमित संसर्ग से, और आहार विहार के दोष से आजकल प्रायः सबलोगों में अल्पाधिक परिमाण से, जडग्रस्त, अर्थात् कर्म में अनिच्छा, शरीर विशीर्ण उज्वलताशून्य, मन स्फूर्तिविहीन, अकाल में केशपक्व, धातुदौर्बल्य, इंद्रियशिथिलता, संतानहानि, मलबद्धता, नेत्र लाल, चक्कर आना, इत्यादि व्याधिग्रस्त और विकृति दिखाई देती हैं ॥ ब्रह्मचर्य का फल देने में, इन व्याधि और जड़ता निवारण करने में यह "च्यवनप्राश" ब्रह्मास्त्र जैसा है ॥ शरीर की दृढ़ता और वृद्धि करने में इसकी जैसी दवा डाक्टरी, हकीमी आदि किसी के मत में अभी तक आविष्कृत नहीं हुई ॥ इसी कारण से आजकल च्यवनप्राश प्रायः आबाल वृद्ध सब लोगों के लिये सेवनीय है । यह निरंतर तीन मास तक सेवन कर शक्तिशाली हो सकें, इसीलिये हमने जहाँ तक हो सका इसका मूल्य कम कर दिया है । यह रसायन है, इसके सेवन से वृद्ध च्यवनऋषि पुनः युवा हो गये थे, इसके सेवन से कास श्वास जाता है, क्षीण वृद्ध तथा बच्चों के अवयवों को पुष्ट करता है, स्वरभेद, क्षयरोग, फुप्फुस के रोग, हृद्रोग, वातरक्त, प्यास, मूत्रस्थानगत दोषों का नाश करता है । विद्यार्थी प्रभृति कामदार लोगों को, तथा क्षीण धातु वालों को यह अति उत्कृष्ट दवा है, मेधा, स्मृति, कांति, आरोग्य, आयुवृद्धि, इंद्रियसामर्थ्य, कामवृद्धि, अग्निदीपन, बल तथा वातकी अनुलोमता होती है, वृद्ध भी नवयौवन प्राप्त कर सकते हैं । १ पाव का मूल्य १॥)

❋ कस्तूरी मोदकः ❋

(रसेंद्रसारसंग्रहे प्रमेहाधिकारे)

अक्षमात्रं प्रयुंजीत सर्वमेहप्रशांतये ॥ वातिकं पैत्तिकं चैव श्लेष्मिकं सन्निपातिकम् ॥ सोमरोगं बहुविधं मूत्रातीसारमुल्बणम् ॥

मूत्रकृच्छ्रं निहंत्याशु मूत्राघातं तथाश्मरीम् ॥ ग्रहणीं पाण्डुरोगं च कामलां कुंभकामलाम् ॥ वृष्यो बलकरो हृद्यः शुक्रवृद्धिकरः परः ॥ कस्तूरीमोदकश्चायं चरकेण च भाषितः ॥

सर्व साधारण सभ्य महाशयों को विदित है कि—उपदंश, गर्मी, सुजाक, भी विषयुक्त और सांक्रामिक रोग है, रोग के आरंभ में ही अच्छी चिकित्सा न होने से यह परिणाम में रक्त और शुक्रको अत्यंत दूषित कर और असाध्य मूत्र रोग पैदा कर शरीर के सुपुष्ट करनेवाले सामानों को नष्ट कर देता है। यह बड़ी व्याधि अविचार-वाले युवक गण, अपवित्र, प्रदर रोग से आक्रांत तथा रजस्वला दुष्ट स्त्री के साथ संसर्ग कर प्राप्त करते हैं, इन विषय में युवकों को हम विशेष रूप से उपदेश करते हैं कि—वे वेश्यासंसर्ग प्रभृति काम से दूर रहें, क्योंकि आजकल जो वातरक्त, कुष्ठ रोगी देखे जाते हैं, उनमें अधिकांश गर्मी के विष से कोढी हुए हैं, गरमी का विष बहुत दिनों तक शरीर में छिपा रह अंत में कुष्ठ रूप से ही शरीरमें फूटकर निकलता है, यह सारे शरीरमें फैलकर चर्मरोग, शुक्र-रोग, जीर्णज्वर, क्षयरोग प्रभृति उत्पन्न कर बल अग्नि वीर्य कांति पुष्टि स्मृति मेधा प्रभृति यौवनके ऐश्वर्य को जडसे ध्वंस करदेता है॥ महर्षियोंकी यही आज्ञा है कि-अग्निमूलं बलं पुसां रेतोमूलं तु जीवितम्॥ तस्मात्सर्गप्रयत्नेन वन्हि शुक्रं च रक्षयेत् ॥ इस कारण मल साफ करके धातु और अग्निको हरदम रक्षा करलेनेसे किसी प्रकारके रोग की बाधा सहसा नहीं होगी। ऊपरोक्त रोगों से बचने का उपाय—रोजके एक टाईम कस्तूरी मोदक, दूसरा टाईम कस्तूरादि तैल कुछ दिन सेवन करनेसे जल्दी आराम होता है। यह बालक, गर्भिणी, तरुण, वृद्ध भी १२ हों मास सेवन कर सक्ते हैं, विशेष पथ्य परहेज की जरूरत नहीं है॥ कस्तूरी मोदक १ तोला का मूल्य १)

❀ कस्तूरादितैल ❀

(सा० सं०)

कस्तूरद्यमिदं तैलं प्रमेहं नाशयेद्ध्रुवम्। उपदंशं व्रणं घोरं पूति-युक्तं च नाशयेत् ॥ उपदंशका अमोघ रामबाण यही है, सब गुण

कस्तूरी मोदक के समान जानना, और यह कस्तूरादितैल गर्भिणी स्त्री सेवन करने से बालक हृष्ट पुष्ट और नीरोग होता है, और उपदंशके घावमें भी मालिश किया जाता है, १ एक चमचा भरका १ एक खुराक होता है। १ तोला का मूल्य चार आना।)

❋ पंचतिक्तघृत ❋

(भै० र०)

पंचतिक्तमिदं ख्यातं सर्पिः कुष्ठविनाशनम् । अशीतिं वातजान् रोगांश्चत्वारिंशच्च पैत्तिकान् ॥ विंशतिं श्लैष्मिकांश्चैव पानादेवापकर्षति ॥ दुष्टव्रणकृमीनर्शः पंचकासांश्च नाशयेत् ॥ योगरत्नाकरेपि—तत्पंचतिक्तं घृतमाशु हन्याद्त्रिदोषविस्फोटविसर्पकण्डूः ॥ यह पंचतिक्त घृत आधा २ तोला प्रतिदिन दोनो टाइम दूध के साथ १ मंडल (४६ दिन) सेवन करने से १८ प्रकार के कुष्ट रोग, ८० प्रकार के वात रोग, ४० प्रकार के पैत्तिकरोग, २० प्रकार के कफ रोग, कुष्टव्रण, कृमिरोग, अर्शरोग, ५ प्रकार की खांसी, विस्फोटक, विसर्परोग, कण्डू इत्यादि पीड़ायें दूर होती हैं और त्रिदोषघ्न है। १ पाव का मूल्य १॥)

❋ रक्तचंदनादिचूर्ण ❋

(रातोलवंगादि सा० सं०)

उष्णेन वारिणा चूर्णं सितया मधुना लिहेत ॥ कफपित्तभवं रोगं सन्निपातज्वरापहम् ॥ १ ॥ कासं श्वासं शिरोर्तिं च गलग्रहमुरोरुजम् ॥ प्रतिश्यायं निहत्याशु वृक्षमिंद्राशनिर्यथा ॥ २ ॥ कोई कोई लोग जुखाम (प्रतिश्याय) रोग को मामूली रोग समझकर आहार विहार ठीक नहीं करके प्रतिश्याय (पीनस) रोग बिगाड़ लेते हैं, इसके परिणाम में अनेक रोग और क्षयरोग तक उत्पन्न होकर शरीर बिगड़ जाता है। तद्यथा—प्रतिश्यायादथो कासः कासात्संजायते क्षयः ॥ क्षयो रोगस्य हेतुत्वे शोषस्याप्युपजायते ॥ इत्यादि प्रमाण स्पष्ट हैं ॥ इस भयंकर रोग से बचने का पहिला उपाय—

स्नेहपदार्थ, लाल मिरचा, खट्टा त्याग कर, जुखाम प्रारंभ होके १-२ रोज के बाद यह चूर्ण गरम जल के साथ, या मिश्री की चासनी और सहत के साथ, अथवा—सेंधा निमका जलके साथ काढा तयार करके २ टाईम सेवन करे तो कफपित्त जन्यजुखाम आदि (इन्फ्लुयुंजा) संपूर्ण रोग समूल ध्वस्त होते हैं ॥ अर्थात्—प्रयिश्याय (पीनस) स्वरभंग, कास, श्वास, शिरदर्द, हृदयरोग, पार्श्वशूल, फुप्फुस के रोग (निमुनिया) जुखाम के ज्वर, सन्निपातज्वर, निद्राभंग, अरुचि इत्यादि रोग समूह नाश होता है। और इसके साथ व्योषादि गुटिका, अथवा बाल कल्याण गुटिका सेवन करने से अत्यन्त गुणकारी होती है ॥ रक्तचंदनादिचूर्ण तोला १ का मूल्य =) व्योषादि गुटिका तोला १ का मू० =) बालकल्याण गुटिका तोला १ का मू० २)

श्रीनारायण ज्योतिर्वैद्यकार्यालय का सतां विनीतः

व्यवस्थापकः बी० डी० के० एन्० एस० नेपाल

श्रीमत्सर्वजितिग्रहाभ्रगजभूशाकेऽसिते श्रावणे, षष्ठ्यांसौम्यदिनेहयर्क्षसहिते शूलेयुतौवाणिजे ॥ देशेश्रीसवितोदयाद्गतघटी, ष्वभ्रांबराग्युन्मितेष्वाऽसीत् कर्कटलग्नकेगुरुनवांशेजन्म कर्णाटके ॥ १ ॥

लग्नेरविः सौम्यतमोयमाश्च भात्रेभृगुः केसुरराजमंत्री ॥ द्यूने ध्वजः खेहिमगुः कुजोऽन्त्ये नारायणोऽजन्युडुपाख्यवंशे॥२॥ (वसंततिलकावृत्तम्)

(शार्दूलविक्रीडित-वृत्तम्)

❋ रसादि औषधों कि प्रधानता और प्रशंसा ❋

अल्पमात्रोपयोगित्वादरुचेरप्रसंगतः ॥ क्षिप्रमारोग्यदायित्वादौषधेभ्योऽधिकोरसः ॥ १ ॥ साध्येषु भेषजं सर्वमीरितंतत्ववेदिना ॥

असाध्येष्वपिदातव्योरसोऽतः श्रेष्ठउच्यते ॥ २ ॥ हरत्तिसकल रोगन्मूर्छितो यो नराणां वितर तिकिलकछः खेचरत्वंजवेन ॥ सकलसुरमुनीन्द्रैर्वंदितः शंभुवीजंसजयति भवसिंधोः पारदः पारदोऽयम् ॥ ३ ॥ योनवेत्तिकुपाराशि रसंहरिहरात्मकम् ॥ वृथा चिकित्सांकुरुतेसवैद्योहास्यतांव्रजेत् ॥ ४ ॥ आयुर्द्रविणमारोग्यं वन्हिर्मेधामहन्दलम् ॥ रूपयौवनलावण्यंरसोपासनयाभवेत् ॥ ५ ॥ शुष्कैंधनं महाराशिं यथादहतिपापकः ॥ तद्वद्दहति सूतोऽयंरोगान् दोषत्रयोद्भवान् ॥ ६ ॥ उदरे संस्थितेसूतेयस्योत्कामतिजीवितम् ॥ समुक्तोदुष्कृताद्धारात् प्रयातिपरमंपदम् ॥ ७ ॥ रोगिभ्यो योरसं दत्तं शुद्धिपाकसमन्वितम् ॥ तुलादानाश्वमेधानांफलं प्राप्नोतिशाश्वतम् ॥८ ॥ व्याधेस्तत्वपरिज्ञानंवेदनायाश्चनिग्रहः ॥ एतद्वैद्यस्यवैद्यत्वं न वैद्यः प्रभुरायुषः ॥ ९ ॥ औषधंमंगलंमंत्रीह्यन्याश्चविविधाः क्रियाः ॥ यस्ययुक्तस्यसिद्धयंति न सिद्धयंतिगतायुषि ॥ १० ॥ प्रसक्तानुप्रसक्तेनेत्यलम् ॥

रसादि औषधोंके नाम,	रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना,	तोला	१ की की० रु० आ० पाई
अगस्त्यसूतराजरसः—	ग्रहणीरोगे, र. रा. सुं.	... ...	३—८—०
अग्निकुमाररसः—	अजीर्णे, वै. र.	... ...	२—०—०
अग्नितुण्डीवटीरसः—	अजीर्णादौ, र. रा. सुं.	... ...	२—०—०
अजीर्णकंटक रसः—	अजीर्णे, वै. र.	... ...	१—८—०
अजीर्णबलकालानलो रसः—	अजीर्णादौ. र. रा. सुं.	...	४—०—०
अमृतार्णवरसः—	अतिसारशूलादौ, ...र. रा. सुं.	...	२—०—०
अश्वकंचुकी(घोड़ाचोली)रसः—	श्वासकासशूलादिसर्वरोगे, र. रा. सुं.		३—०—०
आनन्दभैरव रसः—	त्रिदोषजन्ये, अतिसारे...र. मं.	...	१—४—०
आरोग्यवर्धिनीवटी रसः—	कुष्ठे वातादौ, रसरत्नसमुच्चये		१—०—०
इच्छाभेदी रसः बृहत्—	गुल्मादौ, शा. धर सं.	... ...	१—८—०
उदकमंजरी रसः—	नवीनज्वरे, वैद्यरहस्ये	... ...	२—०—०
उदयभास्कररसः—	कुष्ठे वातरक्तादौ, र. रा. सुं.	...	८—०—०
उन्मादगजकेसरी रसः—	उन्मादरोगे,...वै. र.	... ...	२—०—०
कनकसुंदरीरसः—	ज्वरातिसारे, रसमं.	... ...	१—४—०
कर्पूररसः-	ज्वरातिसारे, ग्रहणीछर्दिविषूचिकादौ, र. रा.सुं.		१—४—०

रसादि औषधोंके नाम,	रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना,	तोला १ की० रु० आ० पाई
कफकेतुरसः	—काले श्वासे च,...र. रा. सुं.	... ... १—०—०
कल्पतरुरसः	—कासश्वासस्वरेषु...र. रा. सुं.	... ... ४—०—०
कस्तूरीभैरवरसः	लघु—सन्निपाते, र. रा. सुं.	... ... ६—०—०
कांचनाभ्रकरसः	—क्षयादौ,...र. रा. सुं.	... ... १६—०—०
कामधेनूरसः	—प्रमेहादौ,...भैषज्य र.	... ... २०—०—०
कामिनीमदभंजनरसः	—रसायनवाजीकरणयोः, र. रा. सुं.	२०—०—०
कामिनीविद्रावणरसः	—वीर्यस्तंभने,...भै. र.	... ... २—०—०
कुमारकल्याणरसः	—बालरोगे, ज्वर-श्वासवमनपारिगर्भिकादौ, भै. र.	... ... २४—०—०
कुमुदेश्वररसः	—क्षयरोगादौ,...वै. र.	... ... ८—०—०
कृमिमुद्गररसः	—कृमिरोगे,...र. रा. सुं.	... ... १—८—०
गलत्कुष्ठारिरसः	—कुष्ठरोगे,...भै. र.	... ... ८—०—०
गगनसुंदररसः	—ज्वरातिसारादौ	... र. रा. सुं. ... ४—०—०
गंगाधररसः	—रक्तातिसारादौ,...	... वै. र. ... ३—०—०
गंधकरसायनम्	—वातरक्तकुष्ठादिसर्वरोगे, योगर.	... ०—८—०
गर्भचिंतामणि रसः	—गर्भिणीस्त्रीरोगे, ... र. रा. सुं.	... १०—०—०
गुल्मकुठाररसः	—गुल्मरोगे,	... ... वै. र. ... २—८—०
गुल्मशार्दूलरसः	—गुल्मप्लीहशोथकामलादौ, र. रा. सुं.	... २—०—०
गुल्मशूलविद्याधर रसः	—गुल्मशूलयोः, ... वै. र....	... २—८—०
ग्रहणीकपाटरसः	—ग्रहणीरोगे,	... ... वै. र. ... ... २—८—०
ग्रहणीगजेन्द्रवटिकारसः	—ग्रहण्यां ज्वरातिसारादौ, र. रा. सुं.	... ३—०—०
चतुर्मुखरसः	—वातप्रमेहकुष्ठक्षयादौ,...	...र. रा. सुं. ... १४—०—०
चिन्तामणिरसः	—वातप्रमेहकर्णनादादौ, र. रा. सुं.	... २०—०—०
चंद्रशेखररसः	—नवज्वरे, ...	भैष. र. ... ... २—०—०
चन्द्रामृतपर्पटीरसः	—क्षये शूले ज्वरादौ, र. रा. सुं.	... ३—०—०
चन्द्रोदय (मकरध्वज) रसः	—वाजीकरणादिसर्वरोगे र. रा. सुं.,	... ३०—०—०
चंद्रप्रभावटीरसः	—प्रमेहमूत्रकृच्छ्रप्लीहोदरशूलादौ, वै. र....	२—०—०
जयमंगलरसः	—सर्वज्वरे, सर्वोपद्रवयुते शीतज्वरे, र. रा. सुं.	१२—०—०

रसादि औषधोंके नाम,	रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना,	तोला १ की की० रु० आ० पाई
जयरसः	—शीतज्वरे, विरेचनकारी, ... वै. र.	...२—०—०
जलोदरारिरसः	—जलोदरे रेचनकारी, र. रा. सुं.	... ३—०—०
जातीफलादिवटी रसः	—ग्रहणीरोगे, आमरक्तातिसारे,	भै. र. ३—०—०
ज्वरकेसरीरसः	—पित्तज्वर-दाहज्वर-सन्निपातज्वरादौ	भै.र. ४—०—०
ज्वरारिअभ्रकम्	—सर्वज्वरे क्षयादौ,...र. रा. सुं....	... ५—०—०
ताम्रपर्पटीरसः	—कासश्वासक्षयकुष्ठादौ,...र. रा. सुं.	... ६—०—०
तारामण्डूरो गुडः	—शूलशोथादौ, भै. र.	... २—०—०
तालांतकज्वरांकुशरसः	—शीतज्वरादौ, र. रा. सुं.	.. ४—०—०
त्रिपुरभैरवरसः	—नवज्वर-शोथशूलादौ, भै. र. ...	... ३—०—०
त्रिभुवनकीर्तिरसः	—सर्वज्वरे,सन्निपाते च, योगर.	... १—८—०
दुर्जलजेता रसः	—दुर्जलजनितज्वरे कासश्वासादौ,	भा. प्र. १—०—०
धात्रीलौहम्	—पित्तरोगे अग्निमांद्यरक्तपित्तादौ,	र .रा. सुं. २—०—०
धात्रीलौहम्	—अष्टविधशूलरोगे, ...	र. रा. सुं. ... २—०—०
नयानामृतलौहम्	—नेत्ररोगे ...	र. रा. सुं. ... २—०—०
नवरसः कस्तूरीमिश्रितः	—सन्निपातज्वरे,	सारसं. नं. १ १२—०—०
नवरसः कस्तूरीमिश्रितः	—सन्निपातज्वरे,	सा. सं. नं. २ ८—०—०
नवायसगुटिका-पाण्डुशोथोदररोगादौ,		र. रा. सुं. ... २—०—०
नागार्जुनाभ्रकम्	—हृद्रोगशूल हृल्लासछर्दिरोगादौ,	र.रा.सुं. २०—०—०
नागेश्वररसः	—गुल्मप्लीहशोथामयादौ,	भैषज्यर. ... ८—०—०
नेत्राशनीरसः	—सर्वनेत्ररोगे ...	र. रा. सुंदरे ... ४—०—०
पंचवक्त्ररसः	—सन्निपातज्वरे, ...	भावप्रकाशे, ... ३—०—०
पंचाननवटीरसः	—प्रमेहवातगुल्मकुष्ठमूत्रकृच्छ्रादौ,	न०अ०अ०२—०—०
पंचामृतपर्पटीरसः	—ज्वरक्षयग्रहणीकासादौ, ...	वै. र. ८—०—०
पंचामृतपर्पटीरसः	—ग्रहणीरोगे क्षयदुर्नामच्छर्दिज्वरादौ,	र. रा .सुं. ८—०—०
प्रतापलंकेश्वररसः	—सर्वसूतिकारोगे ...	योगरत्नाकरे, ... ४—०—०
प्रतापलंकेश्वररसः श्रीपूर्वः	—सर्वज्वरसूतिकारोगसन्निपातादौ,	भै. र. ६—०—०

रसादि औषधोंके नाम, रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना, तोला १ की की० रु० आ० पाई

प्रदरांतकलौहम्—सर्वप्रदरामये कुक्षिशूलमंदाग्नियोनिशूलादौ,
र. रा. सुं. ५—०—०

प्रदररिपुरसः—दुःसाध्यप्रदररोगे ... वैद्यरहस्ये. ... ६—०—०

प्राणवल्लभरसः—पाण्डुरोगे, कामलाश्लीपदानाहशोथशूलादौ,
र. रा. सुं. ६—०—०

पित्तान्तकरसः—सर्वपित्तरोगे ... अतीवोपयोगः
र. रा. सुं ... ... १२—०—०

पिप्पल्याद्यंलौहम्—उदररोगे ... र. रा. सुं. ... ६—०—०

पुनर्नवादिमण्डूरम्—पाण्डुरोगे, शोथशूलकृमिकासादौ,
र. रा. सुं. ... ४—०—९

पूर्णचंद्ररसः—ग्रहणीपित्तार्शादौ, ... र. रा. सुं. ... १२—०—०

पूर्णचंद्रोदयरसः—अतिसारग्रहणीशूलाम्लपित्तवाजीकरणादौ,
भै. र. ४—०—०

बालरसः—बालरोगे, त्रिदोषज्वरकासादौ, र. रा. सुं. ... ३—०—०

बालपर्पटीरसः—बालरोगे, ज्वरातिसारोदरश्वासकासाग्निमंदादौ,
भा. प्र. ४—०—०

बृहज्ज्वरांकुशरसः—सर्वज्वरे मंदाग्नौ चातीवोपयोगः,
र. रा. सुं. १२—०—०

बृहत्पूर्णचंद्ररसः—योगवाहिरसायने, वाजीकरणादिसर्वरोगे,
र. रा. सं. १६—०—०

बृहल्लोकनाथरसः—प्लीहगुल्मयकृत्कामलजीर्णज्वरादौ, भै.र.६—०—०

बृहत्सर्वज्वरहरलौहम्—विषमज्वरे (मलेरिया) वातादिसर्वज्वरे,
भै. र. ६—०—०

बृहत्सूतिकाविनोदरसः—सूतिकारोगे, ... र. रा. सुं. २—०—०

बृहत्सौभाग्यवटीरसः—अष्टविधज्वरे, शीतांगसन्निपाते,
सूतिकायां, र. रा. सुं. ४—०—०

बृहन्मालतीवसंतरसः—जीर्णज्वर प्रमेह मूत्रकृच्छ्रादौ,
र. रा. सुं. १८—०—०

बृहत्कस्तूरीभैरवरसः—सर्वज्वरे आमज्वरातिसारजीर्णज्व-
रादौ, र. रा. सुं. १२—०—०

रसादि औषधोंके नांम,	रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना,	तोला १ की की० रु० आ० पाई

बृहत्कांचनाभ्रकरसः—क्षयकासश्वास प्रमेहादौ, र.रा.सुं. २०—०—०
बृहद्वंगेश्वररसः—सर्वप्रमेहे, मूत्रकृच्छ्रबहुमूत्रप्रदरादौ,
र. रा. सुं. १४—०—०
भस्मेश्वररसः—सन्निपातज्वरे ... भावप्रकाशे ... १—०—०
भक्तविपाकवटीरसः—अग्निमांद्ये, शोथोदरशूलत्रिदोषज्व-
रादौ, भै. र. २—०—०
मन्मथाभ्ररसः—वाजीकरणे, योगवाहिरसायनध्वज-
भंगादौ, भै. र. ८—०—०
महानाराचरसः—गुल्मरोगे, विरेचनकारी, र. राज. सुं. ३—०—०
महायोगराजगुग्गुलः—वातरक्ते, कुष्ठप्रमेहगुल्मरजोदोषादौ,
शा. ध. ४—०—०
महातालेश्वररसः—सर्वकुष्ठरोगे,...शा. धरसंहि ... ... ६—०—०
महाशंखवटीरसः—सर्वाजीर्णरोगे, गुल्मशूलपांडुशोथादौ,
र. रा. सुं. १—८—०
महागंधकरसः—संग्रहणीसूतिकाबालरोगकासश्वासादौ,
र. रा. सुं. २—०—०
महानवरसः कस्तूरी मिश्रित—सन्निपातज्वरे, प्रदररसयनादौ,
सा. सं. २०—०—०
महामृत्युंजयरसः—प्लीहयकृद्गुल्मोदरमंदानलादौ,र.रा.सुं.४—०—०
महाज्वरांकुशरसः—नवज्वरजीर्णज्वरविषमसन्निपातादौ,
भा. प्र. १—८—०
महाराजनृपतिवल्लभरसः—ग्रहणीरोगे,
मंदाग्निशूलाम्लपित्तादौ, भै. र. ... ४—०—०
महाप्राणेश्वररसः—ज्वरसन्निपातशूलग्रहणीमंदानलादौ.
र. रा. सुं. ... ४—०—०
महालक्ष्मीविलासरसः—कफरोगे,
प्रमेहनाडीव्रणगुदामयादौ, र. रा. सुं. १२—०—०
मालती कुसुमाकररसः—सर्व प्रमेह बहुमूत्र सोमरोगादौ,
भै. र. २०—०—०
मूर्च्छान्तकरसः—मूर्च्छारोगे, भ्रमे च, भैष. र. १२—०—०

रसादि औषधोंके नाम,	रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना, तोला १ की की० रु० आ० पाई

मृतसंजीवनीरसः—वातरोगे, आमवातग्रहण्यर्शज्वरादौ, र. रा. सुं. ... २—०—०

मृतसञ्जीवनीरसः—सर्वज्वरे, सन्निपातशूलप्लीहादौ, रेचकः, र. रा. सुं. २—०—०

यकृत् प्लीहारिलौहम्—प्लीहयकृन्मंदाग्निपांडु-शोथोदरादौ, भै. र.... १०—०—०

रक्तपित्तांतकरसः—रक्तपित्तज्वरदाहक्षतक्षीणतृपारुचिशोषादौ, र. रा. सुं. ... ८—०—०

रजतादिलौहम्—क्षयपांडूदरदुर्नामकासश्वासपित्तरोगादौ, रसेंद्रसार. सं. ...८—०—०

रसशेखररसः—उपदंशफिरंगगलत्कुष्ठदुष्टव्रणविस्फोटकादौ, भै. र. ...४—०—०

रससिंदूरमुत्तमम्—स्तंभनपंढत्वनष्टवीर्यादि ५५६ रोगेषु, र. रा. सुंद...१२—०—०

रसपर्पटी—ज्वरातिसारग्रहणीमंदाग्निशूलपांडुकामलादौ, र. रा. सुं. ...४—०—०

रसामृतरसः—रक्तपित्तज्वराम्लपित्तदाहादौ, र. रा. सुं...१—८—०

रामबाणरसः श्रीपूर्वः—अग्निमांद्यामवातविषूचिकाग्रहण्यादौ, र. रा. सुं. २—०—०

रामबाणरसः—अष्टविधज्वरे, विरेचनकारी, वैद्यरह. ... १—८—०

राजमृगांकरसः—क्षयादिसर्वरोगेषु योज्यः, र. रा. सुं. २०—०—०

लक्ष्मीविलासरसः—वातरोगे, क्षयकासाम्लपित्तशूलकुष्ठादौ, र. रा. सुं. ८—०—०

लक्ष्मीनारायणरसः—सूतिकावातप्रमेहसन्निपातविषमज्वरादौ, भै. र. .. ३—०—०

लघुमालतीवसंतरसः—जीर्णज्वरे प्रशस्तः, र. रा. सुं. ४—०—०

लघुसौभाग्यवटीरसः—सन्निपातज्वरे, सूतिकावातमूर्च्छादौ, र. रा. सुं. ३—८—०

लघुकव्यादरसः—अजीर्णरोगे, अग्निमांद्यरसायनादौ, र. रा. सुं. १—०—०

रसादि औषधोंके नाम,	रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना,	तोला १ की की० रु० आ० पाई

लीलाविलासरसः—रजतयुक्तः—अम्लपित्ते, च्छर्दिशूलदाहादौ, र. र. समु. १०—०—०

लीलाविलासरसः—लोहयुक्तः—अम्लपित्ते, च्छर्दिशूलादौ, र. राजसुं., ८—०—०

लोहपर्पटीरसः—ग्रहणीगदे, सूतिकाज्वरशूलामवातप्लीहादौ, र. रा. सुं, ६—०—०

लोहाभ्रतरसः—अर्शरोगे, संग्रहणीत्रिदोषरक्तातिसारादौ, र. रा. सुं. ८—०—०

वसंतकुसुमाकररसः—चंद्रोदययुक्तः—क्षयप्रमेहाम्ल-पित्तरसायनादौ, र. रा. सुं. २०—०—०

वसंतकुसुमाकररसः—रसायने, क्षयप्रमेहसोमरोगदुर्बलादौ, र. रा. सुं. १६—०—०

वंगाष्टकरसः—प्रमेहे. आमदोषविषमज्वरमूत्रातिसारप्रदरादौ, भैष. र. १४—०—०

वंगेश्वररसः—सर्वप्रमेहे, सोमरोगभूत्रकृच्छ्रादो भैष. र. १२—०—०

वातविध्वंसनरसः—वातरोगे, आमदोषगुल्मच्छर्दिशूल विषूचिकादौ, र. रा. सुं., ६—०—०

वातराक्षसरसः—सर्ववातरोगे, उन्मादवातशूलादौ, र. रा. सुं. १६—०—०

विजयपर्पटीरसः—ग्रहणीरोगे, आमशूलशोथाम्लपित्तादौ, र. रा. सुं. ८—०—०

विद्याधराभ्रम्—शूलरोगे, शूलाम्लपित्तरक्तपित्तामंदानलादौ, र. रा. सुं. ६—०—०

विषमज्वरांतकलौहः पुटपक्वः—विषमज्वरप्लीहयकृत्काम-लादौ, र. रा. सुं. १०—०—०

शिलाजत्वादिलौहः—क्षयरक्तपित्तकासश्वासप्रमेहादौ, र. रा. सुं. ६—०—०

शिलाजत्वादिवटी—सर्वप्रमेहे, सोमरोगादौ, भैषज्यर. २०—०—०

शुक्रमातृकारसः—सर्वप्रमेहे, अश्मरीमूत्रकृच्छ्रज्वरादौ, भ. र. ४—०—०

रसादि औषधोंके नाम,	रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना, तोला १ की की० रु० आ० पाई

शूलराजलौहः—सर्वशूलरोगे, अम्लपित्तदुर्नामग्रहणीविषू-
चिकादौ, र. रा. सुं. ४—०—०

शोथकालानलरसः—शोथरोगे, ज्वरकासश्वासग्रहणीमेह-
मन्दानलादौ, भै. र. ४—०—०

शोथारिलौहः—सर्वशोथरोगेकासपाण्डूदररोगादौ,र.रा.सुं.४—०—०

श्वासकासचिंतामणिरसः—श्वासकासक्षयादौ, वहूपयोगः
र. रा. सुं. १४—०—०

श्वासकुठाररसः—श्वासकासक्षयशोथादौ, ... २—०—०

शृंगाराभ्रकरसः—कस्तूरीमिश्रितः, वाजीकरणे,
आमप्रमेहक्षयादौ, वै. र. ८—०—०

शृंगाराभ्रकरसः—कासश्वासोदरशूलाम्लपित्तक्षयादौ,
र. रा. सुं. ८—०—०

श्रीमृत्युंजयरसः—सर्वज्वरे, सकलानुपानेनातीवोपयोगः
र. रा. सुं. ३—०—०

श्रीलक्ष्मीविलासरसः—रसायनवाजीकरणपीनसादौ,
र. रा. सुं. १०—०—०

श्रीसन्निपातमृत्युञ्जयरसः—सर्वसन्निपातविषूचीविषम-
ज्वरादौ, र. रा. सुं. ६—०—०

समीरगजकेसरीरसः—सर्ववातरोगे, अपस्माराजीर्ण-
विषूचिकादौ, र. रा. सुं. २—०—०

समीरपन्नगरसः—सर्ववातरोगे, संज्ञारहिते नासायां-
दातव्यं, र. रा. सुं. ३—०—०

सर्वज्वरांकुशरसः—सर्वज्वरे, मलबद्धे, विषमशीतज्वरादौ,
भै. र. १—८—०

सर्वांगसुंदररसः—यक्ष्मरोगे, सर्ववातज्वरग्रहणीदोष-
मेहादौ, भै. र. १२—०—०

सन्निपातभैरवरसः—सर्वसन्निपाते मलबद्धे चोपयोगः,
र. रा. सुं. ३—०—०

सन्निपातविध्वंसरसः—सन्निपातज्वरे सदैवोपयोगः,
र. रा. सुं. ४—०—०

रसादि औषधोंके नाम, रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना, तोला १ की की० रु० आ० पाई

सार्वभौमरसः सुवर्णघटितः—कासादिसर्वरोगे हितकरः,
र. रा. सुं. २०—०—०

सिद्धमकरध्वजरसः—रसायनवाजीकरणादिसर्वरोगे,
र. रा. सुं. ४८—०—०

सिद्धप्राणेश्वररसः—ज्वरातिसारे, त्रिदोषशूलग्रहणी-
रक्तादौ, र. रा. सुं. ४—०—०

सिद्धलक्ष्मीविलासरसः—क्षयरोगे, शोफप्रतिश्यायादौ,
र. रा. सुं. १६—०—०

सुवर्णपर्पटीरसः—क्षयरोगे, ग्रहणीपांडुशोषप्रमेहादौ,
र. रा. सुं. १५—०—०

सुवर्णमालतीवसंतरसः—जीर्णज्वरातिसारगर्भिणीरोग-
रक्तविकारबालरोगादौ १६—०—०

सुवर्णराजवंगेश्वररसः—प्रमेहे, कांतिमेधावीर्याग्नि-
वर्द्धनादौ, भै. र. १२—०—०

सुधानिधिरसः—अरोचके, आमवातशूलमंदाग्नि-
विषूचिकादौ, र. रा. सुं. २—०—०

सुलोचनाभ्रकरसः—अरोचके, त्रिदोषजन्यारुचिय-
कृत्प्लीहादौ, र. रा. सुं. ४—०—०

सूतशेखररसः—अम्लपित्ते, छर्दिशूलोदावर्तग्रहणीक्षयादि
सर्वरोगे, यो. र १०—०—०

हंसपोटलीरसः—संग्रणीगुल्मातिसारहिक्कापांडुरोगादौ,
शा. धर सं. २—०—०

हुताशनरसः—अग्निमांद्यकफवातबहुमूत्रामातिसारविषू-
चिकादौ, वै. र. १—०—०

हृदयार्णवरसः—हृदयरोगे, हृल्लासरक्तपित्तक्षतक्षयादौ,
र. रा. सुं. ४—०—०

❋ अथ भस्मप्रकरणम् ❋

(नेपाली शुद्ध कृष्णाभ्रक भस्म)

अभ्रकभस्म नं. १ पुट ५०० सर्वरोगे, योगवाहिरसायनम्,
र. रा. सुं. १८—०—०

रसादि औषधोंके नाम,	रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना,	तोला १ की की० रु० आ० पाई
,, ,, नं० २ पुट ३००	,, ,, ,, ,,	१४–०—०
,, ,, नं० ३ पुट १००	,, ,, ,, ,,	१०–०—०

गंधकभस्मकस्तूरीमिश्रित—वातरोगसूतिकावातकुष्ठादौ, र. रा. सुं. ४—०—०

जसदभस्म—कफपित्तप्रमेहपांडुवमिकासश्वासरक्काति-सारनेत्रेषु, र. रा. सुं. ६—०—०

तुत्थभस्म सुशोधित—विषदोषगुदामयकुष्ठाम्लपित्तमल-वद्धादौ र. रा. सुं. २—०—०

दरदपुटपाक (भस्म)—नेत्ररोगकफपित्तहृल्लासकुष्ठाम-वातकामलादौ, र. रा. सुं. १२-०—०

नाग(सीसा) भस्म-क्षयवातगुल्मपांडुभ्रमशूलप्रमेहगुदरो-गादौ, र. रा. सुं ८--०--०

नेपाली ताम्रभस्म—कुष्ठप्लीहकफवातशूलोदरपांडुगुदामय-क्षयादौ, र. रा. सुं. ८--०--०

प्रवाल (मूंगा) भस्म सूर्यपुटी—कफपित्तप्रमेहकासाग्नि-मांद्यनेत्ररोगादौ, र. रा. सुं ४—०—०

प्रवाल (मूंगा) भस्म अग्निपुटी—कफपित्तकासाग्नि-मांद्यछर्दिक्षयादौ र. रा. सुं. ४—०—०

प्रवालपंचामृतभस्म—अग्निमांद्य गुल्मोदरप्लीहहृद्रोगग्रह-ण्यादौ, यो. र. सुं. ८—०—०

मधुमंडूरभस्म—श्वासकासशोथपांडुकृमिजलदोषामवाता-दौ, र. रा. सुं ६--०—०

मुक्ताशौक्तिक भस्म नं०१ अग्निमांद्यश्वासहृद्रोगशूलपित्ता-दौ, र. रा. सुं ४—०—०

मुक्ताशौक्तिक भस्म नं० २ पित्तरोगशूलाजीर्णहृद्रोगका-सादौ, र. रा. सुं. २—०—०

मौक्तिक भस्म नं० १ सुशीतलं, नेत्ररोगविषरोगक्षीणवीर्य-पित्तकफक्षयादौ, र. रा. सुं ६०—०—०

मौक्तिक भस्म नं २ सुशीतलं, कफपित्तक्षयश्वासकासमं-दाग्निनष्टवीर्यादौ, र. रा. सुं. २०—०--०

रसादि औषधोंके नाम, रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना, तोला १ की की० रु० आ० पाई

मृगशृंगभस्म—कृमिरोगहृद्रोगमंदाग्निजीर्णज्वरकासादौ वैद्य र. १—०—०

रौप्यभस्म—अम्लपित्त पित्तरोगधातुक्षीणपांडुक्षयनेत्ररोगादौ, वैद्यर० १०—०—०

लोहभस्म—(नेपालीकांतिसार) उत्तमं—वातरोगशोथशूलजीर्णज्वरादौ र. रा. सुं. ८—०—०

वंगभस्म—धातुक्षीणप्रमेहपांडुमूत्ररोगगुल्मबलहीनक्षयादौ, र. रा. सुं. ६—०—०

वैक्रांतभस्म—वज्रसदृशगुणं—विषदोषकुष्ठक्षयपांडुज्वरोदरप्रमेहादौ, र, रा. सुं. १०-०—०

शंखनाभीस्म—शीतलं ग्राहक, संग्रीहणीनेत्रपुष्पहरकुक्षिरोगादौ, र. रा. सु. ०—४—०

सुवर्णमाक्षिकभस्म—सुवर्णगुणवत्, पांडुप्रमेहक्षयकुष्ठरसायनादौ, र. रा. सुं. ३—०—०

सुवर्णभस्म—शुक्रहानिबलहीनक्षयमंदाग्निनेत्ररोगादिसर्वरोगेषु र. रा. सुं. ५०—०—०

अथ काष्ठादिगुटिकाप्रकरणम्

अजमोदादिमोदक—आमवाते शूलगुल्मानाहशोथादौ ..... वै. र. ०—१—०

इन्फलुर्युजाहारीगुटिका — कफज्वरप्रतिश्यायमलबद्धादौ, सा. सं ०—१—०

एलादिगुटिकाशिलाजतुयुक्ता—रक्तपित्तक्षयकासदुर्बलादौ, वै. र. ०—८—०

कल्पतरु गुटिका—कासश्वासग्रहणीक्षयकुष्ठादौ, र. रा. सुं, ०—८—०

कस्तूरादिवटी नं० १ मुखरोगस्वरभंगकासतृषादौ, वै. र. १—०—०

कस्तूरादिवटी नं० २ मुखरोगप्रतिश्यायादौ,...वैद्य र. ०—८—०

कफहारि गुटिका—कफरोगप्रतिश्यायकासादौ, शा. धर. ०—२—०

काष्ठादि औषधोंके नाम, रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना, तोला १ की की० रु० आ० पाई

कासश्वासांतकवटी—कासश्वासपीनसज्वरस्वरभंगादौ,
वै. र. ०—२—०

कांकायनगुटिका — गुल्मार्शहृद्रोगकृमिरक्तगुल्ममंदानलादौ, भै. र. ०—२—०

किशोरगुग्गुलगुटिका—वातरक्तव्रणकुष्ठगुल्मशोथादौ,
शा. ध. ०—६—०

क्रव्यादपाचकगुटिका—अजीर्णे मंदाग्निशूलादौ, सा. सं.
०—२—०

गंधकादिवटीपाचक—अग्निमांद्यविषूचिकाशूलादौ,
वैद्यर. ०—२—०

गुडकल्पगुटिका—शोथप्रतिश्यायपीनसदुर्नामजीर्णज्वरादौ,
वै. र. ०—१—०

चंद्रोदयावर्ति (गुटिका)—सर्वप्रकारे नेत्ररोगे लेपः,
वै. र. ०—८—०

जीवनगुटिका कस्तूरीमिश्रिता—उपदंशे, लेपनादौ,
सार सं. १—८—०

त्रयोदशांगगुग्गुलगुटिका—वातशोथपक्षवातयोनिदोषादौ,
वै. र. ०—८—०

त्रिसप्तकगुटिका—सर्वज्वरे, विषमज्वरजलदोषादौ,
सार सं. ०—२—०

दद्रुसंहारीगुटिका— सर्वदद्रुरोगे लेपः (विषादि) सा. सं.
०—८—०

नागार्जुनीयोगगुटिका—अर्शोमवातगुल्मशूलज्वरादौ,
वै. र. ०—२—०

नाराचगुटिका—गुल्मशूलमलबद्धादौ, ... वै. र. ०—१—०

निंबादिगुटिका—अष्टविधज्वरे शीतज्वरव्रणशोथादौ,
वै. र. ०—१—६

काष्ठादि औषधोंके नाम, रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना, तोला १ की की० रु० आ० पाई

नेत्रामृतद्रवः कस्तूरीमिश्रितः—सर्वनेत्ररोगोपयोगः,
सा. सं. ०—२—०

नेत्रांजनगुटिका—सर्वनेत्ररोगे हितकारी लेपः, सा. सं. ... ०—४—०

नेपाली कस्तूरीमात्रा—सर्वजनोपकारी, शीशी १ सा. सं. ०—१२-०

पंचकोलगुटिका—ज्वराग्निदीपनकफवातकासादौ भै. र. ०—१—६

प्राणदागुटिका— अर्शरोगे, मूत्रकृछ्रगुल्मपांडुविषम ज्वर
कासवातादौ, भै. र. ०—२—०

पित्तघ्नगुटिका—पित्तरोगज्वरशिरोरोगव्रणविषमज्वरादौ,
सा. सं. ०—२—०

बालकल्याणगुटिका—त्रिदोषज्वरपीनसप्रतिश्याय-
बालरोगादौ सा. सं. २—०—०

ब्रह्मादिगुटिका—सर्वज्वरकासजलदोषबद्धकोष्ठमंदान-
लादौ, सा. सं. ०—१—६

भुवनेश्वरगुटिका (पाचक) सर्वातिसारमंदाग्निग्रहण्याम-
वातादौ, भै. र. ०—१—६

मंडूरवटिका—परिणामशूलसर्वशूलगुल्मप्लीहमंदाग्नि-
शाथादौ, शा. ध. २—०—०

महाज्वरांकुशवटी—सर्वज्वरे बहूपयोगः ... ... सा. सं. ०—४—०

महानारायणीगुटिका—सर्वातिसाराजीर्णवायुविषूचि-
कामादौ, सा. सं. १—८—०

योगराजगुग्गुलगुटिका—वातरोगामवातकुष्ठव्रणप्रमेह-
शूलादौ, वै. र. ०—८—०

रजःप्रवर्तिनीगुटिका—रजोरोधे बहूपयोगः ... भै. र. १—८—०

लवंगामृतवटी—अग्निमांद्यकफवातग्रहणीशूलवृष्यादौ,
वै. र. ०—२—०

वीर्यस्तंभनीगुटिका—वीर्यस्तंभनदुर्बलप्रमेहादौ,
नपुं. अ. अ. ३—०—०

काष्ठादि औषधोंके नाम, रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना, तोला १ की की० रु० आ० पाई

व्योषादिगुटिका—कासश्वास ज्वरपीनसस्वरभंगादौ,
योगचिं. ०—२—०

शिवगुटिकारसायन—प्रमेहमूत्रदोषरजोदोषक्षयादौ,
यो. र. १—०—०

शीतरसगुटिका शिलाजतुयुक्ता—धातुस्रावमूत्रकृच्छ्रादौ,
सा. सं. २—०—०

शुद्धशिलाजतु सूर्यपाक—सर्वप्रमेहवातरक्तादिसर्वरोगे,
नं. १ शा. ध. १—०—०

शुद्धशिलाजतु अग्निपाक—प्रमेहरक्तदोषलेपनादौ, नं. २
शा. ध. ०—८—०

शूलांतकगुटिका—शूलोदावर्तगुल्मवातामाजीर्णादौ,
सा. सं. १—०—०

शूलगजकेसरीगुटिका—शूलामवातोदरबद्धकोष्ठगुल्म-
ज्वरादौ वै. र. ०—१२-०

श्वेतवटी शीपीभस्मघटित—अम्लपित्तादौ, अनुभ. सि, ०—४—०

सुदर्शनगुटिका—सर्वज्वरे, शीतज्वरकासमंदानलादौ,
भा. प्र. ०—२—६

संजीवनीगुटिका—अजीर्णविषूचिकाविषदोषसन्निपातादौ,
वै. र. १—८—०

❋ अथ चूर्णप्रकरणम् ❋

अजमोदादिचूर्ण—अमवाताजीर्णमंदाग्निकफवातादौ,
योगचिं. ०—२—०

अश्वगंधादिचूर्ण—वाजीकरणदुर्बलवृष्यादौ, शा. धर. ०—२—०

अजीर्णमंजरीपाचक—अजीर्णोष्णत्ववद्धकोष्ठपित्तादौ,
सा. सं. ०—३—०

अजीर्णभंजनीचूर्ण—अजीर्णामवातमंदाग्नितृषादौ, सा. सं. ०—२—०

चूर्णादि औषधोंके नाम, रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना, तोला १ की की० रु० आ० पाई
अष्टांगलवणपाचक—अग्निदीपनमदात्ययस्रोतोविशोधनादौ, भैष. र. ०—२—०
अविपत्तिकरचूर्ण—अम्लपित्तछर्दिशूलप्रमेहदाहादौ, र. रा. सुं. ०—२—०
अष्टादशांगक्वाथचूर्ण—सन्निपातज्वरपार्श्वशलकासहिक्कादौ, शा. ध. ०—२—०
आमलक्यादिचूर्ण—रेचकदीपनपाचनामवातादौ, वै. र. ०—१—६
उशीरादिकषायचूर्ण—ज्वरातिसाररक्तातिसारदाहादौ, भै. र. ०—१—६
एलादिचूर्ण (पाचक)—छर्दिरोगाग्निमांद्यारुचित्रिदोषादौ, भै. र. ०—१—६
एलादिकषायचूर्ण—शर्करामेहाश्मरिमूत्रकृछ्रपित्तादौ, शा. ध. ०—१—६
कफहारीमुस्तादिचूर्ण—कफकासश्वासप्रतिश्यायादौ, शा. ध. ०—१—६
कफपित्तलवंगादिकषायचूर्ण—कफपित्तप्रतिश्यायस्वरभंगादौ, सा. सं ०—१—६
कुचलाचूर्णसुशोधित—तीक्ष्णोष्णकर, कफवातश्वाविषोन्मादहरादौ, ०—४—०
कुंकुमादिचूर्ण—अजीर्णवायुपित्तकफरोगहृल्लासामवातादिसर्वरोगे, यो. चिं. १—४—०
घोटीचूर्णबालकोपयोगी—अतिसाराजीर्णज्वरकासश्वासादौ, सा. सं. ०—१—०
चौथीचूर्णबालकोपयोगी—बद्धकोष्ठपित्तवातोदरकृमिज्वरकासादौ, सा. सं. ०—१—०
जीरकादिपाचक—अजीर्णबहुमूत्रमूत्रकृछ्रपित्तवायुतृषादौ, सा. सं. ०—१—६

चूर्णादि औषधोंके नाम, रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना, तोला १ की को० रु० आ० पाई

ज्येष्ठलवंगादिचूर्ण—अग्निदीपनकरदुर्बलत्रिदोषगलग्रह-
प्रमेहकासादौ, वै. र. ०—२—०

ज्येष्ठवासादिचूर्ण—ज्वरत्रिदोषसूतिकावाताजीर्णकास-
श्वासादौ, सा. सं. ०—२—०

टिमुरादिपाचक—उदावर्तगुल्मवाताजीर्णमंदाग्निशूलादौ,
सा. सं. ०—१—६

तालीसादिचूर्ण—आध्मानमंदाग्निप्लीहज्वरछर्दिकासाति-
सारादौ, वै. र. ०—२—०

तृषापहारीचूर्ण—तृषादाहकासविषूचिकादौ, सा. सं. ०—८—०

दशमूलकषायचूर्ण—वातसूतिकावातारुचिमलबद्ध-
हृद्रोगादौ, शा. ध. ०—१—०

देवदार्वादिकषायचूर्ण—सूतिकारोगशिरोर्तिज्वरशूलकंपमूर्छादौ,
भै. र. ०—१—६

धान्यपंचकचूर्ण—आमवातदोषारुचिमंदाग्निशूलादौ,
शा. ध. ०—१—०

नस्यचूर्णउत्तम—पीनसशिरोरोगप्रतिश्यायसंतोषकरादौ, अनुभव.,
०—२—६

नारायणचूर्ण—सर्वोदररोगार्शवातपांडुज्वरकासविष-
रोगादौ, वै. र. ०—२—०

नारायणीमलम्—पक्वापक्वविस्फोटकशोधनरोपणकंडू-
निवारणे, अ. भ. ०—२—०

निदिग्धिकादिकषायचूर्ण—वातपित्तज्वरकासप्रतिश्यायादौ,
भै. र. ०—१—६

नृसिंहचूर्ण, वा गुटिका—वाजीकरणे, वातपित्तकफादि-
सर्वरोगे, भै. र. ०—४—०

नेत्रपीयूषचूर्ण कस्तूरीभीमसेनीकर्पूरयुक्त—सर्वनेत्ररोगे,
सा. सं. २—०—०

चूर्णादि औषधोंके नाम, रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना, तोला १ की की० रु० आ० पाई
नेपाली विचित्र दंतमंजन चूर्ण—सर्वदंतरोगे, पुडिया १ के भै. र. ०—२—०
पारदादिमलम्—कंडुददुकृमिकुष्ठलेपनस्नानापयोगि, वै. र. ०—२—०
पिप्पल्यादिचूर्ण—संग्रहणीवायुशूलाजीर्णगुल्मादौ, शा. ध. ०—१—६
पुष्यानुगचूर्ण—रक्तप्रदररक्तातीसारयोनिदोषरजोदोषादौ, भै. र. ०—२—०
प्रमेहप्रदरांतकचूर्णप्रवालभस्मघटित—सर्वप्रमेहप्रदरादौ, सा. सं. १—०—०
वडवानलचूर्ण—अजीर्णमंदाग्निकफवातादौ, भै. र. ०—१—६
बाललवंगादिचूर्ण—अशक्ताजीर्णमंदाग्निशूलकासादौ, सा. सं. ०—२—०
बृहल्लवंगादिचूर्ण बलवीर्यवर्धक—प्रमेहप्रदरवाजीकरणादौ, योगचिं. ०—३—०
भास्करलवणपाचक—गुल्मार्शग्रहणिजठरश्लेष्मवातादौ, वै. र. ०—१—६
भीमसेनीकर्पूर उत्तम—सर्वनेत्ररोगकृमिरोगमंदानलादौ, यो. र. २—०—०
महामंजिष्ठादिकषायचूर्ण—वातरक्तकुष्ठत्वग्रोगविसर्पादौ, भै. र. ०—२—०
महासुदर्शनचूर्ण—सर्वज्वरविषमज्वरसन्निपातकासादौ, भावप्र. ०—२—०
मुस्तादिकषायचूर्ण—कफवातकासश्वासादौ योज्यः, शा. ध. ०—१—६
यमानीखांडवपाचक—अरुचिमलबद्धहृदयपार्श्वशूलादौ, भै. र. ०—१—६
रजःप्रवृत्तिचूर्ण—रजोगुल्मशूलगर्भाशयदोषादौ, सा. सं. ०—८—०

चूर्णादि औषधोंके नाम, रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना, तोला १ की की० रु० आ० पाई

वज्रक्षारचूर्ण—गुल्मशूलाध्मानजठराजीर्णग्रहाग्निमंदादौ,
वै. र. ०—४—०

शतपुष्पादिचूर्ण—आमरक्तरक्तप्रदररजोदोषगर्भाशय-
शूलादौ, सा. सं. ०—२—०

शंखादिचूर्णपाचक—शूलामवातत्रिदोषजन्यसर्वशूलादौ,
र. रा. सुं. ०—४—०

श्वेतपर्पटीक्षारचूर्ण—अम्लपित्तज्वरवद्धकोष्ठशूलादौ,
सा. सं. ०—८—०

श्वेतचतुःसमचूर्णशीपीभस्मघटित—अम्लपित्तपित्तादौ,
अ. सि. १—०—०

शृंग्यादिचूर्ण—हिक्काश्वासारुचिकासपीनसादौ, योज्यः,
वै. र. ०—१—६

श्रीखंडादिचूर्ण—प्रमेहप्रदरपित्तवातज्वरमूत्ररोधकासादौ,
योगचिं. ०—२—०

सितोपलादिचूर्ण—क्षयकासश्वासारुचिजिह्वास्तम्भशूलादौ,
भै. र. ०—२—०

सूतिकापिप्पल्यादिचूर्ण—सूतिकारोगारुचिबद्धकोष्ठादौ,
सा. सं. ०—२—०

हिंग्वष्टकचूर्ण—अग्निमांद्यामवातगुल्मशूलादौ, ... वै. र. ०—१—६

❀ अवलेह पाक और घृत तोला १० के (शतल) ❀

अगस्त्यहरीतकीअवलेह—कासप्रमेहवद्ध्रकोष्ठहृद्रोगक्षयादौ,
शा. ध. १—०—०

अश्वगंधादिघृत—वातरोगदुर्बलवाजीकरणरसायनादौ,
भै. र. १—०—०

कस्तूरीमोदकरसायन—सर्वप्रमेहरक्तप्रदरवाजीकरणादौ,
र. रा. सुं १०—०—०

अवलेह पाकादि औषधोंके नाम, रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना, तोला १ की की० रु० आ० पाई

कामेश्वरमोदक—ग्रहणीरोगदुर्बलरसायनवाजीकरणादौ,
भै. र. ०—१२—०

कुटजावलेह—रक्तातीसारक्तप्रदरामवातशूलादौ, शा. ध. १—०—०

च्यवनप्राश्यावलेह—कासश्वासदुर्बलवाजीकरणरसायनादौ, शा. ध. ०—१२—०

त्रिफलादिघृत—सर्वनेत्ररोगाशक्तपित्तशिरोरोगादौ,
शा. ध. १—०—०

पंचतिक्तघृत—त्रिदोषजन्यवातरक्तकुष्ठकासकंडूवादौ,
शा. ध. १—०—०

फलघृत—वंध्यारोगयोनिरोगगर्भाशयरोगेषुयोज्यः, शा. ध. २—०—०

बृहत्कूष्मांडावलेह—रक्तपित्तक्षयज्वरकासश्वासशोषादौ,
भावप्र. ०—१२—०

बृहद्वासावलेह—रक्तपित्तकासश्वासराजयक्ष्मादौ, भा. प्र. ०—१२—०

वासासार—कासश्वासरक्तपित्तक्षयरोगादौ, सा. सं. २—०—०

शिवामोदक—(बालपोष) बालरोगाजीर्णदुर्बलादौ, भै. र. ०—८—०

सुधासिंधुपाक—अशक्तपित्तवातस्मृतिविभ्रमादौ, सा. सं. ०—८—०

सौभाग्यशुंठीलेह—सर्वसूतिकारोगवातदुर्बलादौ, वै. र. १—०—०

❋ तेल अरिष्ट तोला १० के (रातल) ❋

कस्तूरादितैल—उपदंशफिरंगरोगगर्भाशयशोधनेषु, नं. १
सा. सं. ४—८—०

कस्तूरादितैल—उपदंशफिरंगविस्फोटकव्रणादौ, नं. २
सा. सं. २—४—०

धत्तरादितैल—सर्ववातश्लीपदगलगंडगंडमालादौ, वै. र. १—४—०

धात्रीतैल—शिरोरोगनेत्ररोगधातुक्षयोन्मादादौ, योगर. १—०—०

भृंगामलकादितैल—शिरोरोगाकालपलितपित्तादौ, शा. ध. १—४—०

महामरीच्यादितैल—सर्वकुष्ठचर्मरोगविसर्पादौ, भावप्र. १—८—०

तेल अरिष्ट औषधोंके नाम, रोगनिर्देश, ग्रंथसूचना, तोला १ की की० रु० आ० पाई

महानारायणीतैल—सर्ववातास्थिचर्मगतरोगेषु, शा. ध. २—०—०

महालाक्षादितैल-सर्ववातघातव्रणबालग्रहसूतिकादौ,भा.प्र.१—४—०

षड्बिंदुतैल--शिरदंतनासाकेशादिरोगेषु बहूपयोगः,
भैष. र. २--०--०

सर्ववातांतकतैल--विषादि--सर्ववातसूतिकावातादौ,
सा. सं. १--४--०

अशोकारिष्ट—प्रदरप्रमेहारुचिरक्तपित्तज्वरार्शमंदाग्नि-
शोषादौ, भै. र. १--०-०

दशमूलारिष्ट--वाजीकरणसूतिकारोगवातपांडुक्षयोदरादौ,
भै. र. १--०--०

सारिवाद्यरिष्ट--प्रमेहपिडिकासर्वप्रमेहमंदाग्निपित्तोप-
दंशादौ, भै. र. १--०—०

संजीवनीद्रव--सर्वज्वरे दुर्बलादौ १--४--०

कुक्कुरश्रृगालविषहरण--यो. र. खुराक १ के ०--२--०

हिंगुलोत्थ ८ संस्कृतशुद्धपारा— तोला १ के र. रा. सुं. ३—०--०

सुशोधितअमलासारगंधक-- तोला १ के र. रा. सुं. ... ०—४--०

अंगूरीहिंग—औषधियों के योग्य तोला १ के .. ... ०—४--०

उत्तम कस्तूरी—तोला १ के मूल्य ... ... ३० रुपैया से ४० तक

काश्मीरकेसरी—तोला १ के मूल्य ... ... १ रुपैया से ४ तक

कस्तूरीमृगासन—१ के मूल्य ... ... २ रुपैया से ६ तक

काला और श्वेत चमर १ के मूल्य ... ... १ रुपैया से ६ तक

विशेष ज्ञातव्य विषय--निमुनिया (कफज्वर) का प्रकोप बालकों को माता के दूध के कुपथ्य से और को आहार विहार के दोष से, ज्वर अंतर्गत होके कफ सूखकर शीतांग दमा (श्वास) आता है, हृदय में और पार्श्व में दर्द होकर बेहोश (मूर्छा प्रलाप सन्निपात) होता है, उस समय अनभिज्ञ लोग, फलानी देवता

लगी है, दवा नहीं करना, ऐसा कहकर फसाते हैं, तथा प्राण संकट प्राप्त होता है। लेकिन सो वात डाक्टर, कविराज, सुशिक्षित वैद्य लोग फजूल कहते हैं, प्रमाण--सर्वदोषोल्वणो यस्य सन्निपातः प्रकुप्यति ॥ व्याधिभ्यो दारुणश्चैव वज्रशस्त्राग्निसन्निभः ॥१॥ केवलोच्छ्वासपरमः स्तब्धाङ्गः स्तब्धलोचनः ॥ तदवस्थं तु तं दृष्ट्वा मूढो व्याहरते जनः ॥ २ ॥ धर्षितो राक्षसैर्नूनमवेलायां चरंति ये ॥ अंवयाब्रुवते केचिद्यक्षिण्या ब्रह्मराक्षसैः ॥३॥ पिशाचैर्गुह्यकैश्चैव तथाऽन्यैर्मस्तके हतम् ॥ सन्निपातमिमं प्राहुर्भिषजाः कूटपालकम् ॥ ४ ॥ लेकिन पूर्वकर्मानुसार ग्रहदशा बिगडे विना मनुष्य रोगादिसे दुःख नहीं पाते हैं।

तदुक्तं कर्मफलम्--पूर्वजन्मकृतं पापं व्याधिरूपेण बाधते ॥ तच्छांतिरौषधैर्दानैर्जपहोमसुरार्चनैः ॥ इस कारण ग्रहदशाकी शांति और पूजा करके रोगानुसार यत्नपूर्वक हवा बचाकर निमुनियाका निमित्त छाती में पट्टी लगाके वा मालिश सेक ताप करके पूर्वोक्त दवा (बालरस, महागंधकरस इत्यादि) सेवन करने से आराम होता है।

अथ संक्षिप्त कर्मविपाकः।

अरुण उवाच ॥

कथं कार्यो दिवानाथ प्रश्नकालेऽस्य यो विधिः।
तत्तत्कर्मविमोक्षाय तत्तन्निष्कृतिसूचकः ॥ १ ॥

श्रीसूर्य उवाच।

आधिव्याधिमतो जंतोर्विरक्तिर्जायते यदा।
दैवज्ञं स तदा प्राप्य निजदुःखं निवेदयेत् ॥ २ ॥

कर्मानुसाररोगाः।

कृतघ्नो जायते मर्त्यः कफवान् श्वासकासवान् ॥
विघ्नकर्ता च भोक्तृणां शोफी भवति मानवः ॥ ३ ॥

मातृगामी भवेद्यस्तु लिंगं तस्य विनश्यति ।
स्रवद्गर्भा भवेत्सातु बालकं हंति या पुरा ॥ ४ ॥

सन्तानबाधकयोगः ।

सुतपतिरस्तगतो वा पापयुतः पापवीक्षितोवापि ।
संततिबाधां कुरुते केंद्रे पापान्विते चंद्रे ॥ ५ ॥

संतानोत्पत्तिका उपाय ।

संपूज्य देवान् स्वगुरुं च नत्वा वस्त्रादिभोज्यैः परितोषयित्वा ।
आराधयित्वा विधिनांबिकां च ततः पिबेच्छुद्धफलं घृतं च ॥ ६ ॥

विदुषामग्रे सविनयप्रार्थना ।

अकारादिक्रमेणेदं संज्ञापत्रं विनिर्मितम् ।
यदि स्यात्स्खलितं ह्यत्र क्षंतव्यं तत्सुहृज्जनैः ॥ ७ ॥

दवा मिलने का पता—

बी० डी० के० नारायण शास्त्री,
ठि० देवपाटन, पोष्ट नेपाल ।

मुद्रक—
कृ० व० पावगी,
हितचिन्तक प्रेस,
रामघाट,
बनारस सिटी।

११०२ a

॥ श्रीः ॥

हेर्नु होस परमावश्यक

वी० डी० के० पं० नारायण शास्त्री भट्टजी का शिष्य दैवज्ञ पं० बाबुराम उपाध्यायले बनाएको अनेक विषय का चक्र सारिणी व्रतपर्वादिमुहूर्त हरूले विभूषित भएको ४८ पेजी श्रीनेपाल देशको सुप्रसिद्ध सर्वांग सुन्दर पंचांग प्रतिवर्षमा छापि तैयार हुन्छ एक गट्ठा लिने हरूले पहिलेनै सूचना दिएमा किफायत साथले दिइन्छ फुटकर लिनेलाइ प्रति १ को मो रु० ।१३ पैसा को दर छ सज्जन महाशय हरू समा विन्ति गर्छु कि यस् सालको पंचांग १ पटकलिएर विचार मात्रै गर्नुहोला यो पात्रो (पंचांग) न हेर्नु सारै भूल हो किन भन्नु होला भने थोरै पैसाले धेरै कुरा बखतै मा हेर्न पाइने फेरी कठिनस्थलमा भाषा वाट उदाहरण पनि दियाको हुनाले बुझ्नेजन हरूलाई छर्लङ्ग नैनाजस्तो हुन जाने साधारण मानिस लाई पनि बहुतै सजिलो भए कोले हाँमिले ताडिफ गरेर ताडिफ गरेको ठहर्न सक्दैन किन भन्नुहोलाभने कुमालेको हाँडी कुमालेनै लंवरीलुन्को भाँडो जस्तो गरीवयान गर्छ तसर्थ असल् कंसल्मा यो एस्तो चीज हो भन्ने विचार आफैलेगर्नु हुन्यैछ भन्ने आशा छ ।

पाइने ठेगाना—

१. वी० डी० के० पं० नारायण शास्त्री, देवपाटन,
शाखास्थान—नक्साल, नागपोखरी, नेपाल।

२. दैवज्ञ पं० बाबुराम उपाध्याय सापकोटा,
टंगाल, नेपाल ।

IN INDIA